



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....जाभर टुड़ाला.....

दिनांक ३.५.२०२१....पृष्ठ संख्या.....२.....कॉलम.....१८५.....

प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से हो रहा पर्यावरण में असंतुलन : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिशों के अनुसार करें कपास की बिजाई : कुलपति

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकूमी) के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने कहा कि पृथ्वी सभी जीवों का पोषण करती है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा है, जिसकी विश्व पृथ्वी दिवस वजह से स्थिति पर विश्वविद्यालय

के किसान छात्रावास परिसर में किया पौधरोपण को

समझना पड़ेगा और इसे बेहतर बनाने में योगदान देना होगा। वे विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के किसान छात्रावास परिसर में बीरबार को पौधरोपण करने के बाद उपस्थित को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन भू-दृश्य इकाई के नियंत्रण अधिकारी डॉ. देवेंद्र दहिया की देखरेख में किया गया।

प्रोफेसर बीआर कांबोज ने बताया कि पहली बार 22 अप्रैल 1970 को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया था। इस वर्ष की थीम पृथ्वी को पुनः स्थापित करना रखा गया है। पृथ्वी को स्वस्थ बहले की तरह बनाने के लिए हम सभी को अपनी धरती को हरा-भरा और बेहतर बनाने का संकल्प लेना पड़ेगा। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

हिसार। कपास की बिजाई किसान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार करें, ताकि उनको अपनी फसल की अच्छी ऐदावार मिले और अधिक मुनाफा हो। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकूमी) के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बीरबार को जारी बयान में कही।

उन्होंने कहा कि गत वर्ष जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई की थी, उनकी फसलों में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम था। समय-समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी किसानों से सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से संपर्क में रहेंगे।

इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएयू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत के अनुसार 28 अप्रैल तक चलने वाले अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है। टीम में विश्वविद्यालय की ओर से आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक



विश्व पृथ्वी दिवस पर पौधरोपण करते कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज एवं अन्य।

ये रहेंगे टीम में शामिल

टीम में एक मृदा वैज्ञानिक और प्लांट पैथोलॉजिस्ट भी शामिल होंगे, जो भिट्टी की जांच आदि की जाकरी देंगे। इसके अलावा कृषि विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, एटीएम, बीटीएम एवं कृषि सुपरवाइजर को इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाएगा। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने बताया कि कपास अनुभाग के वैज्ञानिक लगातार कपास फसल में पैराविल्ट, पोषक तत्वों की कमी, सूखे के कारण कपास फसल के सूखने के कारणों का पता लगाएंगे और इनके निदान की समावनाएं तलाशेंगे।

सस्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया पैथोलॉजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कीट गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पटांडी कैसरी

दिनांक २३.५.२०२१....पृष्ठ संख्या.....२.....कॉलम.....२.५.....

‘पर्यावरण में असंतुलन रोकने के लिए करने होंगे प्रयास : प्रो. काम्बोज’

हिसार, 22 अप्रैल (पंकेस): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पृथ्वी जो कि सभी जीवों का पोषण करती है, मगर प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा है, जिसकी वजह से स्थिति दयनीय होती जा रही है। ऐसे में हमें पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना पड़ेगा और इसे बेहतर बनाने में योगदान देना होगा।

लगातार वृक्षों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों के साथ छेड़छाड़, अंधाधुंध रसायनिक खाद, कीटनाशकों, खरपतवारनाशी व प्लास्टिक के प्रयोग से हमारी धरती का स्वरूप एवं पर्यावरण खराब होता जा रहा है। ऐसे में इसे बचाए रखने के लिए समाज को अहम कदम उठाते हुए सामूहिक प्रयासों की



विश्व पृथ्वी दिवस पर पौधारोपण करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज एवं अन्य।

जरूरत है। ये विचार उन्होंने विश्व उपरांत कहे। कार्यक्रम का आयोजन पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में भू-दश्य इकाई के नियंत्रण अधिकारी विश्वविद्यालय के किसान छात्रावास डॉ. देवेंद्र दहिया की देखरेख में किया के प्रांगण में पौधारोपण करने के गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय

के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे तथा पौधारोपण किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सैनिक भास्कर

दिनांक २३.५.२०२१....पृष्ठ संख्या.....२.....कॉलम.....५.८.....

एचएयू के वीसी ने कहा- प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा विश्व पृथ्वी दिवस पर एचएयू के किसान छात्रावास के प्रांगण में पौधारोपण, अवेयर भी किया

भास्कर न्यूज़ | हिसार

एचएयू के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि पृथ्वी जोकि सभी जीवों का पोषण करती है, मगर प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा है, जिसकी वजह से स्थिति दयनीय होती जा रही है।

ये विचार उन्होंने विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में एचएयू के किसान छात्रावास के प्रांगण में पौधारोपण करने के बाद कहे। कार्यक्रम का आयोजन भू-दृश्य इकाई के नियंत्रण



पौधारोपण करते एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज एवं अन्य।

अधिकारी डॉ. देवेंद्र दहिया की विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया था। देखरेख में किया गया। प्रोफेसर आगे चलकर इस दिन को मनाने के बी.आर. काम्बोज ने बताया कि निर्णय को विश्व के लगभग सभी पहली बार 22 अप्रैल 1970 को देशों ने स्वीकार किया और बदलते

पर्यावरण की समस्या की गंभीरता को देखते हुए इसे प्रतिवर्ष विश्वभर में मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष विश्व पृथ्वी दिवस के लिए एक विषय निर्धारित किया जाता है। इस वर्ष की थीम पृथ्वी को पुनः स्थापित करना रखा गया है। पृथ्वी को स्वस्थ व पहले की तरह बनाने के लिए हम सभी का कर्तव्य है कि अपनी धरती को हरा-भरा और बेहतर बनाने का संकल्प लेना पड़ेगा ताकि संसार के सभी पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों एवं जंतुओं की जैव विविधता का संरक्षण किया जा सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....लोक संपर्क

दिनांक २३.५.२०२१...पृष्ठ संख्या.....५.....कॉलम.....३६.....

खेती-किसानी • एचएयू व कृषि विभाग मिलकर कपास की बिजाई के लिए करेंगे जागरूक, वीसी ने कहा- जिन किसानों ने एचएयू वैज्ञानिकों की सिफारिश अनुसार बिजाई की उनकी फसलों में रोगों का असर अन्य की तुलना में कम था

मास्कर न्यूज़ | हिसार

एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि किसान कपास की फसल की बिजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की ओर से बताई सिफारिशों के अनुसार करें ताकि किसान को अपनी फसल की अच्छी पैदावार मिले और अधिक से अधिक मुनाफा हो।

उन्होंने कहा कि गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों की जांच से पता चला कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार फसल की बिजाई की थी, उनकी फसलों में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम था। इसलिए किसान वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार फसलों की बिजाई करें ताकि अधिक फसल उत्पादन मिल सके। समय-समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी किसानों

से सोशल मीडिया के माध्यम से किसानों से संपर्क में रहेंगे। इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएयू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं।

- 28 अप्रैल तक चलेगा जागरूकता अभियान, एचएयू ने विशेषज्ञों की टीम बनाई: एचएयू के अनुसधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत के अनुसार इस अभियान को सफल बनाने के लिए एचएयू के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित की है। यह अभियान 28 अप्रैल तक चलाया जाएगा। इस टीम में एचएयू आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक सस्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कीट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया है। टीम में एक मृदा वैज्ञानिक और प्लांट पैथोलोजिस्ट भी शामिल होंगे, जोकि मिट्टी की जांच आदि की जानकारी देंगे।

पांच जगह प्रदर्शनी प्लांट लगाए जाएंगे

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने बताया कि कपास अनुभाग के वैज्ञानिक लगातार कपास फसल में पैराविल्ट, पोषक तत्वों की कमी, सूखे के कारण कपास फसल के सूखने के कारणों का पता लगाएंगे और इनके निदान की संभावनाएं तलाशेंगे। किसानों के खेतों में पांच या इससे अधिक स्थानों पर जहां हल्की मिट्टी है, प्रदर्शनी प्लांट लगाकर किसानों को जागरूक किया जाएगा।

वैज्ञानिकों का सुझाव : बीटी कपास के दो पैकेट प्रति एकड़ बिजाई करें
कपास अनुभाग के वैज्ञानिकों ने किसानों को बीटी कपास का सिफारिश किया हुआ बीज खरीदने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा जिले के कृषि विभाग के अधिकारियों व कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों को कपास उत्पादन से संबंधित नवीनतम जानकारी प्रदान करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि किसान बीटी कपास के दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई करें और कतार से कतार की व पौधे से पौधे की दूरी 100 सेंटीमीटर व 45 सेंटीमीटर अथवा 67.5 सेंटीमीटर या 60 सेंटीमीटर रखें। साथ ही किसान 15 मई तक बीटी कपास की बिजाई पूरी करते हुए इसमें प्रति एकड़ के हिसाब से एक बैग यूरिया, एक बैग डी.ए.पी., 30 से 40 किलोग्राम पोटाश व 10 किलो जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) खेत की तैयारी के समय अवश्य डालें। फसल बिजाई के बाद जहां खुला पानी मौजूद है वहां 45 से 50 दिन या इसके बाद ही पानी लगाएं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

मैट्रिकुलेशन

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २३:४.२०२१....पृष्ठ संख्या.....३.....कॉलम.....७-८.....

विश्व पृथ्वी दिवस पर विश्वविद्यालय परिसर में किया पौधारोपण

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति
प्रोफेसर वीआर कामोज ने कहा कि
पृथ्वी जो कि सभी जीवों का पोषण
करती है, मगर प्राकृतिक संसाधनों के
अंधाधुध दोहन के कारण पर्यावरण में
असंतुलन बढ़ रहा है, जिसकी वजह
से विश्व दयनीय होती जा रही है।
ऐसे में हमें पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों
को समझना पड़ेगा और इसे बेहतर
बनाने में योगदान देना होगा। लगातार
वृक्षों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों
के साथ छेड़छाड़, अंधाधुध रसायनिक

खाद, कीटनाशकों, खरपतवारनाशी
व प्लास्टिक के प्रयोग से हमारी धरती
का स्वरूप एवं पर्यावरण खराब होता
जा रहा है। ऐसे में इसे बचाए रखने
के लिए समाज को आहम कदम उठाते
हुए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है।
ये विचार उन्होंने विश्व पृथ्वी दिवस के
उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के किसान
छात्रावास के प्रांगण में पौधारोपण करने
के उपरांत कहे। कार्यक्रम का आयोजन
भू-दृश्य इकाई के नियंत्रण अधिकारी
डा. देवेंद्र दहिया की देखरेख में किया
गया। (जासं)



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....भौनीक मासिक.....

दिनांक २१.५.२०२१ पृष्ठ संख्या..... २ कॉलम..... ६

भारतीय शिक्षण मंडल ने मनाया स्थापना दिवस

भारकर नूज़ि हिसार

भारतीय शिक्षण मंडल ने अपना स्थापना दिवस मनाया। इस मैरे पर एचएयू में वीसी डॉ. कंबोज और चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं भारतीय शिक्षण मंडल के प्रान्त सह प्रमुख डॉ. राकेश 1969 में वधवा बतौर अतिथि उपस्थित हुए। शिक्षण मंडल के संयोजक डॉ. जितेन्द्र जांगड़ा ने सरस्वती पूजन मंत्र का जाप किया। आशा हाई स्कूल की उपाचार्य डॉ. संजना धवन ने मंच का संचालन किया। डॉ. राकेश वधवा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के निर्माण में भारतीय शिक्षण मंडल की सकारात्मक भूमिका पर प्रकाश डाला। जीजेयू में जनसंचार विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर तथा भारतीय शिक्षण मंडल के प्रान्त प्रचार प्रमुख डॉ. मनोज दयाल ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्ष 1969 में राम नवमी के ही दिन भारतीय शिक्षण मंडल की स्थापना हुई थी। तब से लेकर आज तक भारतीय शिक्षण मंडल ने शिक्षा में भारतीयता लाने के लिए अमृत्यु योगदान दिया है। एचएयू के वैज्ञानिक डॉ. अनिल पंधाल और जीजेयू के सहायक प्रोफेसर डॉ. संदीप जिंदल ने भी विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....भैंडी कृषि संबंध

दिनांक २३.५.२०२१....पृष्ठ संख्या.....३.....कॉलम.....३-६.....

एचएयूव कृषि विभाग मिलकर कपास की बिजाई के लिए जिलेवार कर रहा जागरूक

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बताई सिफारिशों अनुसार करें कपास की बिजाई : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 22 अप्रैल
(सुरेंद्र सोढी) : चौधरी
चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय हिसार के
कुलपति प्रोफेसर बी.आर.
काम्बोज ने कहा कि किसान
कपास की फसल की
बिजाई विश्वविद्यालय के



प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों
अनुसार करें ताकि किसान को अपनी
फसल की अच्छी पैदावार मिले तथा
अधिक से अधिक मुनाफा हो। उन्होंने

कहा कि गत वर्ष बीमारियों से
प्रभावित हुई फसलों की जांच-
पड़ताल से पता चला कि जिन
किसानों ने विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिकों द्वारा की गई
सिफारिशों अनुसार फसल की
बिजाई की थी उनकी फसलों में
बीमारियों का असर अन्य

फसलों की तुलना में बहुत कम था।
इसलिए किसान वैज्ञानिकों की
सिफारिशों अनुसार फसलों की बिजाई
करें ताकि अधिक से अधिक फसल

28 तक यात्रा जाएगा अभियान : अनुसंधान निदेशक

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत के अनुसार इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है। यह अभियान 28 अप्रैल तक चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस टीम में

विश्वविद्यालय की ओर से आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक सत्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कॉर्ट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया गया है।

उत्पादन मिल सके। समय-समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी किसानों से सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से

किसानों से संपर्क में रहेंगे। इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएयू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दीर्घभूमि

दिनांक २३.५.२०२१...पृष्ठ संख्या.....१.....कॉलम.....२-६.....

अभियान

किसानों की आय दोगुणा करना लक्ष्य

विवि के कुलपति प्रो.
बीआर कंबोज ने
वैज्ञानिकों को
दिए निर्देश

हरियाणा न्यूज || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर कंबोज ने कहा कि किसान कपास की फसल की विजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सि फा रि शों अनुसार करें ताकि किसान को अपनी फसल की अच्छी पैदावार मिले तथा अधिक से अधिक मुनाफा हो।

उन्होंने कहा कि गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों की जांच-पड़ताल से पता चला कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई

कपास की खेती के लिए गांव-गांव जाकर वैज्ञानिक दे रहे प्रशिक्षण



सिफारिशों अनुसार फसल की विजाई की थी उनकी फसलों में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम था। इसलिए किसान वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार फसलों की विजाई करें ताकि अधिक से अधिक फसल उत्पादन मिल

सके। इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएयू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को विश्वविद्यालय की तरफ से हरसंभव सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी।

चलाया जाएगा अभियान

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निवेशक डॉ. एस.के. सहरावत के अनुसार इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है। उन्होंने बताया कि इस टीम में विश्वविद्यालय की ओर से आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक सस्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजरिट डॉ. नवजोहन सिंह, कॉट विज्ञानी डॉ. अनिल तो शामिल किया गया है। टीम में एक मुद्रा वैज्ञानिक और प्लांट पैथोलोजरिट भी शामिल होंगे, जो मिट्टी की जांच आदि की जानकारी देंगे। कपास अनुभाग के आध्यक्ष डॉ. ओमेंद्र सोनवान ने बताया कि कपास अनुभाग के वैज्ञानिक लगातार कपास फसल में पैरावल्टि, पोषक तत्वों की कमी व अन्य चीजों की जानकारी दी जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

द्वारा द्वारा

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २२.५.२१...पृष्ठ संख्या.....।।.....कॉलम.....५.८.....

कपास को लेकर सभी जिलों में प्रशिक्षण शिविर

किसान कृषि विभाग से संपर्क बनाए रखें

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
बीटी कपास की खेती पर
समसामयिक सुझाव किए जारी

हाइमूनि न्यूज़ ||| फतेहाबाद

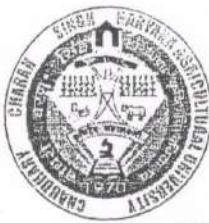
पिछले वर्ष कपास बिजाई क्षेत्रों में फसल में बीमारी एवं अन्य समस्याओं का प्रकोप बहुतायत मात्रा में दुआ था। इस को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं कृषि विभाग हरियाणा सरकार के संयुक्त तत्वाधान में कपास के सभी जिलों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसका पहला चरण 13 से 28 अप्रैल तक पूरा कर लिया जाएगा।

फतेहाबाद में भी कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर का

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बलदेव राज कंबोज ने कहा कि पिछले वर्ष बीमारियों से नष्ट हुई फसलों की जांघ पड़ताल करने से पता चला है कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों के अनुसार फसल की बिजाई ठीं थी, उनकी फसल में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम रहा था। कुलपति ने बताया कि इस वर्ष कपास की बिजाई किसान विश्वविद्यालय द्वारा बताई गई सिफारिशों के अनुसार करें ताकि कपास का उत्पादन अधिक से अधिक हो सके तथा समय-समय पर विश्वविद्यालय व कृषि विभाग से संपर्क बनाए रखें।

आयोजन किया जाएगा। इस शिविर में कृषि विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, एटीएम, बीटीएम एवं कृषि सुपरवाइजर को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस प्रकार के शिविर कपास की अवस्था अनुसार लगातार जारी रहेंगे ताकि समय अनुसार किसानों को कपास में आने वाली समस्याओं से अवगत कराया जा सके व उनका निदान बताया जा सके। कृषि वैज्ञानिकों ने कहा कि किसान बीटी कपास का सिफारिश किया हुआ बीज ही लें। इसकी जानकारी के लिए किसान जिले के कृषि विभाग या कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क करें। बीटी कपास के दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई करें। कतार से कतार व पौधे से पौधे की दूरी 100 गुणा 45 सेंटीमीटर वा 67.5 गुणा 60 सेंटीमीटर रखें।

किसान बीटी कपास की बिजाई 15 मई तक अवश्य परा कर लें। पूर्व से पश्चिम की दिशा में बीटी कपास की बिजाई लाभकारी होती है। बीटी कपास की बिजाई के समय एक एकड़ में एक बैग यूरिया, एक बैग डाएपी, 30 से 40 किलो पौटाश व 10 किलो जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) खेत की तैयारी के समय अवश्य डालें। बीटी कपास में जहां खुला पानी लगता है वहां पहला पानी बिजाई के 45-50 दिन या इसके बाद ही लगाएं। रेतीले इलाके में जहां फव्वारा विधि से पानी लगता है वहां भी कपास उगने के चार-पांच दिन बाद ही पानी लगाएं। पिछले साल जिन खेतों में या गांव में गुलाबी सुंदरी की समस्या थी उन खेतों की लकड़ियां, टिंडे व पत्तों को झाड़ कर नष्ट कर दें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....लोक संपर्क सेवा.....

दिनांक 23.6.2021....पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....1-2.....

किसान कृषि विशेषज्ञों की राय के अनुसार ही करें कपास फसल की बिजाई : प्रो. बलदेव राज

सिरसा, (सरोरा) : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं कृषि विभाग हरियाणा द्वारा संयुक्त रूप से 28 अप्रैल 2021 तक प्रदेश के सभी ज़िलों में कपास फसल के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इन विशेष प्रशिक्षण शिविर में किसानों को कपास फसल बिजाई के लिए खाद, बीज व अन्य तकनीकी पहलुओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज ने बताया कि पिछले वर्ष कपास बिजाई क्षेत्रों में फसल में बीमारी एवं अन्य समस्याओं का प्रकोप बहुतायत मात्रा में हुआ था, जिसे ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेशभर में विशेष प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में कृषि विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, पटीएम, बीटीएम एवं कृषि सुपरवाइजर को प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि समय-समय पर किसानों को कपास फसल में आने वाली समस्याओं से अवगत कराया जा सके व उनका निदान बताया जा सके उन्होंने किसानों से आह्वान किया है कि वे कृषि विशेषज्ञों द्वारा बताई गई सिफारिशों के अनुसार ही कपास की बिजाई करें ताकि अधिक से अधिक उत्पादन हो। साथ ही किसान समय-समय पर विश्वविद्यालय व कृषि विभाग के अधिकारियों से भी संपर्क में रखें और नई-नई तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

द्वितीय भूमि

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २३.५.२०२१ पृष्ठ संख्या..... १२ कॉलम..... २-३

विशेषज्ञों की राय अनुसार करें फसल की बिजाई: प्रो. बलदेव

हरिगृह न्यूज़ म सिरसा

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं कृषि विभाग हरियाणा द्वारा संयुक्त रूप से 28 अप्रैल 2021 तक प्रदेश के सभी जिलों में कपास फसल के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इन विशेष प्रशिक्षण शिविर में किसानों को कपास फसल बिजाई के लिए खाद, बीज व अन्य तकनीकी पहलुओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज ने बताया कि पिछले वर्ष कपास बिजाई क्षेत्रों में फसल में बीमारी एवं अन्य

समस्याओं का प्रकोप बहुतायत मात्रा में हुआ था, जिसे ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेशभर में विशेष प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में कृषि विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, एटीएम, बीटीएम एवं कृषि सुपरवाइजर को प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि समय-समय पर किसानों को कपास फसल में आने वाली समस्याओं से अवगत कराया जा सके व उनका निवान बताया जा सके। उन्होंने किसानों से आह्वान किया है कि वे कृषि विशेषज्ञों द्वारा बताई गई सिफारिशों के अनुसार ही कपास की बिजाई करें ताकि अधिक से अधिक उत्पादन हो।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

प्र० १०१ क्र. ३१७।९०।

दिनांक २५.६.२०२१ पृष्ठ संख्या ३ कॉलम ५

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार करें कपास की बिजाई : काम्बोज

जागरण संगवदाता, हिसार :
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति
प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि
किसान कपास की फसल की बिजाई
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा
बताई गई सिफारिशों अनुसार करें।
किसान को अपनी फसल की अच्छी
पैदाचार मिले तथा अधिक से अधिक
मुनाफा हो। उन्होंने कहा कि गत वर्ष
बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों
की जांच-पड़िताल से पता चला कि
जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशों
अनुसार फसल की बिजाई की थी
उनकी फसलों में बीमारियों का असर
अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम
था। समय-समय पर विश्वविद्यालय
के वैज्ञानिक भी किसानों से सोशल
मीडिया, प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक
मीडिया के माध्यम से किसानों से
संपर्क में रहेंगे।

28 अप्रैल तक चलाया जाएगा
अभियान : अनुसंधान निदेशक
विश्वविद्यालय के अनुसंधान
निदेशक डा. एसके सहरावत के
अनुसार इस अभियान को सफल
बनाने के लिए विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिकों की एक टीम गठित
कर दी गई है। यह अभियान 28
अप्रैल तक चलाया जाएगा। टीम
में विश्वविद्यालय की ओर से
आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
से सहायक वैज्ञानिक डा. सोमवीर,
सहायक संस्थ विज्ञानी डॉ. करमल
सिंह आदि को शामिल किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाबी कॉस्टरी.....

दिनांक २३.५.२०१....पृष्ठ संख्या.....२.....कॉलम.....५.४.....

‘एच.ए.यू. व कृषि विभाग मिलकर कपास फसल की बिजाई के लिए जिलेवार कर रहा जागरूक’

हिसार, 22 अप्रैल (पंकेस):
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति
प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि
किसान कपास की फसल की बिजाई
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा
बताई गई सिफारिशों अनुसार करें,
ताकि किसान को अपनी फसल की
अच्छी पैदावार मिले तथा अधिक से
अधिक मुनाफा हो। उन्होंने कहा कि
गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई
फसलों की जांच-पड़ताल से पता
चला कि जिन किसानों ने

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की
गई सिफारिशों अनुसार फसल की
बिजाई की थी, उनकी फसलों में
बीमारियों का असर अन्य फसलों की
तुलना में बहुत कम था। इसलिए
किसान वैज्ञानिकों की सिफारिशों
अनुसार फसलों की बिजाई करें,
ताकि अधिक से अधिक फसल
उत्पादन मिल सके। समय-समय पर
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी
किसानों से सोशल मीडिया, प्रिंट
मीडिया व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के
माध्यम से किसानों से संपर्क में रहेंगे।

इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग
एवं एच.ए.यू. के वैज्ञानिक संयुक्त
रूप से एक जागरूकता अभियान भी
जिलेवार चला रहे हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान
निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत के
अनुसार इस अभियान को सफल
बनाने के लिए विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर
दी गई है। यह अभियान 28 अप्रैल
तक चलाया जाएगा। उन्होंने बताया
कि इस टीम में विश्वविद्यालय की
ओर से आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन

विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ.
सोमवीर, सहायक सस्य विज्ञानी डॉ.
करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजिस्ट
डॉ. मनमोहन सिंह, कीट विज्ञानी डॉ.
अनिल को शामिल किया गया है।
टीम में एक मृदा वैज्ञानिक और
प्लांट पैथोलोजिस्ट भी शामिल होंगे,
जो मिट्टी की जांच आदि की
जानकारी देंगे। इसके अलावा कृषि
विभाग से जुड़े सभी अधिकारी,
ए.टी.एम., बी.टी.एम. एवं कृषि
सुपरवाइजर को इस प्रशिक्षण में
प्रशिक्षित किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... भैंसी का भास्तुरा.....

दिनांक २२.६.२०२१...पृष्ठ संख्या..... ६..... कॉलम..... १-६.....

ट्रायल • किसान ड्रैगन फ्रूट की व्यापक स्तर पर कर सकते हैं खेती, एचएयू ने भी ट्रायल के तौर पर आधा एकड़ में उगाई किसान ड्रैगन फ्रूट के साथ पपीता, भिंडी उगाकर बढ़ा सकते हैं आमदनी, एक बार उगाने पर 20 साल तक उत्पादन, प्रति एकड़ 4-5 टन फल मिलेगा

महसूब अली | हिसार



ड्रैगन फ्रूट की फसल दिखाता एचएयू का वैज्ञानिक।

अब प्रदेश के किसान ड्रैगन फ्रूट की खेती घर के आंगन के साथ साथ व्यापक स्तर पर करके भी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए एचएयू ने ट्रायल के तौर पर करीब आधा एकड़ में ड्रैगन फ्रूट उगाई है। एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को ड्रैगन फ्रूट के साथ-साथ भिंडी, पपीता उगाने के टिप्प भी दे रहे हैं। किसान एक बार फसल लगाकर 20 साल तक 4-5 टन फल प्रति एकड़ पा सकते हैं।

एचएयू के कुलपति डॉ. बीआर कम्बोज ने बताया कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के उद्देश्य से किसानों को ड्रैगन फ्रूट की खेती करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। एचएयू के वानिकी विभाग के

जानिए... ड्रैगन फ्रूट की प्रमुख प्रजातियां

- **हाइलोक्रेस अनडर्टस:** इसमें गुलाबी त्वचा के साथ सफेद गूदा पाया जाता है।
- **हाइलोक्रेस कोस्टारिसिक्स:** इसमें गुलाबी त्वचा के साथ-साथ लाल गूदा पाया जाता है। जिसे हाइलोक्रेस पॉलिमरम के

नाम से भी जाना जाता है।

- **हाइलोक्रेस सेलेनिसरस:** इसमें पीली त्वचा के साथ-साथ सफेद गूदा भी पाया जाता है। तीनों किस्मों में एक एकड़ में 4 से 5 टन तक फ्रूट प्राप्त किया जा सकता है।

की जुताई करनी होती। जुताई के बाद ड्रैगन फ्रूट के पौधे को खेत में लगाई। इसे लगाने से पहले इसके लिए 6 फुट लंबे आरसीसी पोल लगाने होते हैं। हर पौधे के बीच कम से कम 6 फुट की दूरी होनी चाहिए। सिंचाई में उच्चादा पानी की आवश्यकता नहीं होती। इसका पोधा 60-200 रुपए तक मिल जाएगा। पौधे की कीमत इस बात पर निर्भर करती है कि पौधा कितना पुराना है। 3 साल पुराने पौधे लगाने पर उपज जल्दी मिलती है। मानसून में ड्रैगन फ्रूट तेज़ होता है। मानसून के चार महीने में प्रत्येक 40 दिनों के अंतराल में फल पकते हैं। एक फल का वजन औसतन 100 से 300 ग्राम तक होता है। बत्तान में ड्रैगन फ्रूट 250 से लेकर 300 रुपये प्रति किलो तक मिल रहा है।

आच्यक डॉ. आरएस डिल्लो और सहायक वैज्ञानिक डॉ. करण ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट कैंटरस प्रजाति का है। इसमें पानी की खपत बहुत कम होती है साथ ही इसके पौधे में कोई भी नहीं लगते। विदेशों में मांग अधिक होने के चलते इसकी कीमत भी अधिक है। इसमें काफी खेती के लिए सबसे पहले जर्मीन

मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट के गुण होते हैं। इसके अलावा विटामिन सी, प्रोटीन व कैल्शियम भी भरपूर होता है। कैंसर के ड्रैगन फ्रूट की होती है। एचएयू की सहायक वैज्ञानिक डॉ. छवि सिरोही ने बताया कि इसकी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	23.04.2021	--	--

कपास उत्पादक जिलों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाना, कपास की खेती को बढ़ावा देना और किसानों की आमदनी बढ़ाना उद्देश्य अच्छी पैदावार के लिए 15 मई तक कर लें कपास की बिजाई

- پیشترے ساتھ میں
سلسلے میں یا ہمیں میں
کی گواہی بھی کی تھی
سچ رہا۔ ان سلسلے
کی تکمیل یا، دیکھ
د چکی کو ڈاک کر
پہنچ لے کر دے نہ
لکھ کر / پڑھنے کا

प्राप्ति द्वारा अंतर्गत होने वाली विधियाँ हैं। अधिकार एवं विधियाँ इसके बहुत सारे विधियों के अन्तर्गत आती हैं। विधियों की विभाजन की विधि विधियों की विधि है। विधियों की विधि विधियों की विधि है।

कृष्ण वसन्त के बाहर वसन्त
पर्वती की दूर दृश्यमान
देख रहा था अब उसका एक
दृश्य विलग हो गया था जिसके
पास आपने अपनी वसन्त
विशेषता देखी थी। इसकी
विशेषता यह थी कि वह एक
दृश्य विलग था जिसके पास
उसकी वसन्त विशेषता देखी
थी। इसकी विशेषता यह
थी कि वह एक दृश्य विलग
था जिसके पास उसकी वसन्त
विशेषता देखी थी। इसकी
विशेषता यह थी कि वह एक
दृश्य विलग था जिसके पास
उसकी वसन्त विशेषता देखी
थी।



- कृति द्वारा कपास की छेती के
लिए यह दिए जा रहे सद्गुर



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी दिल्ली	23.04.2021	--	--

किसान कृषि विशेषज्ञों की राय के अनुसार ही करें कपास फसल की बिजाई

सिरसा,(दीपक शर्मा):हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं कृषि विभाग हरियाणा द्वारा संयुक्त रूप से 28 अप्रैल 2021 तक प्रदेश के सभी जिलों में कपास फसल के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इन विशेष प्रशिक्षण शिविर में किसानों को कपास फसल बिजाई के लिए खाद, बीज व अन्य तकनीकी फहलुओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी जा रही है हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज ने बताया कि पिछले वर्ष कपास बिजाई क्षेत्रों में फसल में बीमारी एवं अन्य समस्याओं का प्रकोप बहुतायत मात्रा में हुआ था, जिसे ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेशभर में विशेष प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

● एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाया

किया जा रहा है। इन शिविरों में कृषि विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, एटीएम, बीटीएम एवं कृषि सुपरवाइजर को प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि समय-समय पर किसानों को कपास फसल में आने वाली समस्याओं से अवगत कराया जा सके व उनका निदान बताया जा सके उन्होंने किसानों से आहांका किया है कि वे कृषि विशेषज्ञों द्वारा बताई गई सिफारिशों के अनुसार ही कपास की बिजाई करें ताकि अधिक से अधिक उत्पादन हो। साथ ही किसान समय-समय पर विश्वविद्यालय व कृषि विभाग के अधिकारियों से भी संपर्क में रखें और

नई-नई तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करें किसान बीटी कपास का सिफारिश किया हुआ बीज ही लें और बीटी कपास के दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई करें। कतार से कतार व पौधे से पौधे की दूरी 100&45 सेंटीमीटर या 67.5&60 सेंटीमीटर रखें। किसान बीटी कपास की बिजाई 15 मई तक अवश्य पूरा कर लें। पूर्व से पश्चिम की दिशा में बिजाई लाभकारी होती है। बीटी कपास की बिजाई के समय एक एकड़ में एक बैग यूरिया एक बैग डीएपी 30 से 40 किलो व 10 किलो जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) खेत की तैयारी के समय अवश्य डालें। बीटी कपास में जहां खुला पानी लगता है वहां पहला पानी बिजाई के 45-50 दिन या इसके बाद ही लगाएं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
हिसार टुडे न्यूज

दिनांक
23.04.2021

पृष्ठ संख्या
--

कॉलम
--

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें कपास की बिजाई : काम्बोज

टुडे न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कूलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान कपास की फसल की बिजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों



द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें ताकि किसान को अपनी फसल की अच्छी पैदावार मिले तथा अधिक से अधिक मुनाफा हो। उन्होंने कहा कि गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों की जांच-पड़ताल से पता चला कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई की थी उनकी फसलों में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत

कम था। इसलिए किसान वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार फसलों की बिजाई करें ताकि अधिक से अधिक फसल उत्पादन मिल सके। समय-समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी किसानों से सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से किसानों से संपर्क में रहेंगे। इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएयू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत के अनुसार इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है। यह अभियान 28 अप्रैल तक चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस टीम में विश्वविद्यालय की ओर से आनुबोधिकों एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमबीर, सहायक सस्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कोट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार न्यूज	23.04.2021	--	--

विश्व पृथ्वी दिवस पर विश्वविद्यालय के किसान छात्रावास के प्रांगण में किया पौधारोपण

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि पृथ्वी जो कि सभी जीवों का पोषण करती है, मगर प. । कृ. तिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण में असंतुलन बढ़ रहा है, जिसकी वजह से स्थिति दयनीय होती जा



रही है। ऐसे में हमें पृथ्वी के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना पड़ेगा और इसे बेहतर बनाने में योगदान देना होगा। लगातार वृक्षों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों के साथ छेड़छाड़, अंधाधुंध रसायनिक खाद, कीटनाशकों, खरपतवानाशी व प्लास्टिक के प्रयोग से हमारी धरती का स्वरूप एवं पर्यावरण खराब होता जा रहा है। ऐसे में इसे

बचाए रखने के लिए समाज को आहम कदम उठाते हुए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है। ये विचार उन्होंने विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के किसान छात्रावास के प्रांगण में पौधारोपण करने के उपरांत कहे।

कार्यक्रम का आयोजन भू-दृश्य इकाई के नियंत्रण अधिकारी डॉ. देवेंद्र दहिया की देखरेख में किया गया। प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि पहली बार 22 अप्रैल 1970 को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया था। आगे चलकर इस दिन को मनाने के निर्णय को विश्व के लगभग सभी देशों ने स्वीकार किया और बदलते पर्यावरण की समस्या की गंभीरता को देखते हुए इसे प्रतिवर्ष विश्वभर में मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष विश्व पृथ्वी दिवस के लिए एक विषय निर्धारित किया जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

समाचार पत्र का नाम

हैलो हिसार

23.04.2021

--

--

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें कपास की बिजाई : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हैलो हिसार न्यूज
हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान कपास की फसल की बिजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें ताकि किसान को अपनी फसल की अच्छी पैदावार मिले तथा अधिक से अधिक मुनाफा हो। उन्होंने कहा कि गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों की जांच-पड़ताल से पता चला कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई की थी उनकी फसलों में बीमारियों का



असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम था। इसलिए किसान वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार फसलों की बिजाई करें ताकि अधिक से अधिक फसल उत्पादन मिल सके। समय-समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी किसानों से सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से किसानों से संपर्क में

रहेंगे। इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएसू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं। 28 अप्रैल तक खलाया जाएगा अभियान : अनुसंधान निदेशक विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत के अनुसार इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है। यह अभियान 28 अप्रैल तक खलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस टीम में विश्वविद्यालय की ओर से आनुवांशिकी एवं पीथ प्रबन्धन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक सर्व विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कीट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया गया है। टीम में एक मृदा वैज्ञानिक और प्लांट पैथोलोजिस्ट भी शामिल होंगे, जो मिटटी की जांच आदि की जानकारी देंगे। इसके अलावा कृषि विभाग से बुड़े सभी अधिकारी, ए.टी.एम., बी.टी.एम. एवं कृषि सुपरवाइजर को इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाएगा। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने बताया कि कपास अनुभाग के वैज्ञानिक लगातार कपास फसल में पैराविल्ट, पोंपक तत्वों की कमी, सूखे के कारण कपास फसल के सूखने के कारणों का पता लगाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपत्र	23.04.2021	--	--

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें कपास की बिजाई : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

पाठकपत्र न्यूज

हिसार, 22 अप्रैल : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान कपास की फसल की बिजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें ताकि किसान को अपनी फसल की अच्छी पैदावार मिले तथा अधिक से अधिक मुनाफा हो। उन्होंने कहा कि गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों की जांच-पड़ताल से पता चला कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई की थी उनकी फसलों में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम था। इसलिए किसान वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार फसलों की बिजाई करें ताकि अधिक से अधिक फसल उत्पादन मिल सके। समय-समय पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी किसानों से सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से किसानों से संपर्क में रहेंगे। इसके लिए प्रदेश का कृषि विभाग एवं एचएयू के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से एक जागरूकता अभियान भी जिलेवार चला रहे हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के.



सहरावत के अनुसार इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है। यह अभियान 28 अप्रैल तक चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस टीम में विश्वविद्यालय की ओर से आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक सस्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कीट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया गया है। टीम में एक मृदा वैज्ञानिक और प्लांट पैथोलोजिस्ट भी शामिल होंगे, जो मिट्टी की जांच आदि की जानकारी देंगे। इसके अलावा कृषि विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, ए.टी.एम., बी.टी.एम. एवं कृषि सुपरवाइजर को इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाएगा। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने बताया कि कपास अनुभाग के वैज्ञानिक लगातार कपास फसल में पैराविल्ट, पोषक तत्वों की कमी, सूखे के कारण कपास फसल के सूखने के कारणों का पता लगाएंगे और इनके निदान की संभावनाएं तलाशेंगे। इसके अलावा किसानों के खेतों में पांच या इससे अधिक स्थानों पर जहां हल्की मिट्टी है, प्रदर्शनी प्लांट लगाकर किसानों को जागरूक किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम् छोर	22.04.2021	--	--

ध

हिसार, बीरबार, 22 अप्रैल 2021

2

किसान वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें फसल बिजाई: कुलपति

हिसार/22 अप्रैल/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि किसान कपास की फसल की बिजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई सिफारिशों अनुसार करें ताकि किसान को अपनी फसल की अच्छी पैदावार मिले तथा अधिक से अधिक मुनाफा हो। उन्होंने कहा कि गत वर्ष बीमारियों से प्रभावित हुई फसलों की जांच-पड़ताल से पता चला कि जिन किसानों ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई सिफारिशों अनुसार फसल की बिजाई की थी उनकी फसलों में बीमारियों का असर अन्य फसलों की तुलना में बहुत कम था। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत के अनुसार वैज्ञानिकों की एक टीम गठित कर दी गई है जो किसानों को जागरूक करेगी। टीम

में आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग से सहायक वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर, सहायक सस्य विज्ञानी डॉ. करमल सिंह, प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. मनमोहन सिंह, कोट विज्ञानी डॉ. अनिल को शामिल किया गया है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. ओमेंद्र सांगवान ने बताया कि कपास अनुभाग के वैज्ञानिक कपास फसल में पैराविल्ट, पोथक तत्वों की कमी, सूखे के कारण कपास फसल के सूखने के कारणों का पता लगाएंगे और इनके निदान की संभावनाएं तलाशेंगे। इसके अलावा किसानों के खेतों में पांच या इससे अधिक स्थानों पर जहां हल्की मिट्टी है, प्रदर्शनी प्लांट लगाकर किसानों को जागरूक किया जाएगा। उन्होंने कहा कि किसान बीटी कपास के दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई करें और कतार से कतार की व पौधे से पौधे की दूरी 100 सेंटीमीटर व 45

सेंटीमीटर अथवा 67.5 सेंटीमीटर या 60 सेंटीमीटर रखें। साथ ही किसान 15 मई तक बीटी कपास की बिजाई पूरी करते हुए इसमें प्रति एकड़ के हिसाब से एक बैग युरिया, एक बैग डीएपी, 30 से 40 किलोग्राम पोटाश व 10 किलो जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) खेत की तैयारी के समय अवश्य डालें। फसल बिजाई के बाद जहां खुला पानी मौजूद है वहां 45 से 50 दिन या इसके बाद ही पानी लगाएं और रेतीले इलाके में जहां फब्बारा विधि से पानी लगता है वहां भी कपास उगने के चार-पांच दिन बाद ही पानी लगा दें। कपास की शुरुआती अवस्था में ज्यादा जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए इससे मित्र कीटों की संख्या कम हो जाती है। इसके अलावा बीते वर्ष जिन खेतों में या गांव में गुलाबी सुंदी की समस्या थी उन खेतों की लकड़ियां, टिंडे व पत्तों को झाड़ कर नष्ट कर दें।



चौधारी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

समस्त हरियाणा

22.04.2021

10

—

मध्यम विद्यालय

प्राचीनकाल २२ अप्रैल २०२१

2

कृषि वैज्ञानिकों की सिफारिशों अनुसार करें कपास की बिजाई : प्रो. काम्बोज



कुलपति बोले, एवं ये
व कृषि विभाग
मिलकर कपास फसल
की विजाइ के लिए
जिलेवार कर रहा
जापक

मप्पन हीरायाना चूज
हिमर। पीढ़ी चरण पिंड हीरायाना दृढ़ि
विश्विवालय हिमर के कुलकर्ति हों जो अब उपर्युक्त
ने कहा कि हिमर काशम को मप्पन को विश्व
विश्विवालय के गैरिकारों द्वारा बदल दिए गये विषयार्थों
भूम्यान करें ताकि हिमर को जनते वस्तुन की
अच्छी दैवतान सिले तथा अधिक में अधिक मुख्या
हो। उद्देश्य कहा गया कि इस वर्ष विषयार्थों से प्रत्यावर्ती हुई
मप्पनों को विष्व-वालयम में पहले वक्ता कि विव
विषयार्थों ने विश्विवालय के गैरिकारों द्वारा को गई
विषयार्थों प्रत्यक्ष वस्तु को विश्व की सी तरफ

फसलों में बीजीयों का अमर अम फसलों की तुलना में बहुत कम था। इसलिए छिपान वैज्ञानिकों द्वारा प्राप्तिगती अनुमान फसलों को विश्वास करने लायी गयी थी कि अधिक वाहन लकड़पन प्रिय महंगा है। इसके लिए प्रटीटा का कृषि विभाग एवं एसएस के वैज्ञानिक संसद् रूप से एक जागरूकता अधिकार भी लिये गये हैं।

अप्रूल तक चलाया जाएगा।

ज्ञानवान् : डा. महारावत
विश्वविद्यालय के अनुसंधान प्रिंटरहाउस, एस.पी.
महाराष्ट्र के अनुसार इस अधिकारित को सामने बढ़ाने के
लिए विश्वविद्यालय के वैदेशिकों को एक टीम गठित
कर दी गई है। यह अधिकारि 25 अगस्त तक बनाया
बायाएगा। उन्होंने कहा कि इन टीम में विश्वविद्यालय
की ओर से अनुशासित एवं एक प्राप्त विभाग से
मासाक वैदेशिक हूं योग्यता, व्यापक सामग्री की
हूं जागरूकता सिंह, एवं एक विशेषज्ञता वाला
सिंह हैं और विदेशी वैज्ञानिकों से आवाहन दिया गया

पोषक तत्वों की कमी का लगाएँगे पता : डॉ. मानवान

कारण अनुभव के अल्पतम् तर्थे ऑपेंट सोलिलॉगन ने बताया कि कारण अनुभव के विशेषज्ञ लगातार कारण फ्रेम में परीक्षित, परोक्ष उन्होंने कोई रूप से कारण कारण फ्रेम के सूची के कारणों का नहीं लिया और इसके विद्यमान से विशेषज्ञता नहीं। इसके असली किसिम की सूची में वर्च वा एप्लीक बदलनों पर जब हड्डी चिह्न है, इसके साथ-साथ असली विद्यमान को जानकारी दिया जाता है।

प्रोसे करें कल्पास की विजाई

करात अनुभाग के वैद्युतिकों ने किसानों को बोटी कराए का सिफारिश किया हुआ जोर लगाए तो वो चाहते हैं।

कृषि विभाग के अधिकारीयों व खपि विभाग कीटों के विविध प्रकार के प्रशंसनीय के बाबत से किसी न को कठात्मन उपलब्ध होने से मरणीजीव वर्षीयां जहांकारी उत्पन्न करते हैं। उन्हें यह कि विभाग जीती कठात्मन के दो एकत्र इस एकात्म के विवाह से खिलाई जाए और कठात्मन के कठात्मन को व वैष्णों से वैष्णों द्वारा 100 मंटीपीटा 45 मंटीपीटा अथवा 67.5 मंटीपीटा वा 60

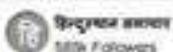
प्रथम अनुभव के बैंडिनिकों ने किसानों का अद्भुत
कला की जिसन 15 मई तक खेली। काशी की
बहावली पूरी करते हुए इसमें दृष्टि एकाकी के लियाह से
कैवल्य के चूंचिए, एक बैग हो गयी, 30 से 45
लीटरीयां पोटान व 10 किलो लिंग मालेट(21
लिटर) खेल की तैयारी के मध्य अवधारणाएँ।
खेल खिलाफ़ के बाद वहाँ खुला परों और दूर है
इसके 5 से 50 दिन वह प्राकृत बढ़ते हों परन्तु लालां और
जानियों द्वारा उनके में जाहाँ कालाघाँ चिप्पिं से पानी लालां है
जहाँ भी काशी प्राप्ति के बाद जांच दिए बाद ही पानी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	फॉलम
डिस्ट्रिक्ट समाचार एजेंसी	23.04.2021	--	--

21 dailymir



पार्श्विक संसाधनों के लौह ने विश्व पृथ्वी का संतुलन कुशलपूर्ण



13 May 2021 | 11:15 AM

विश्व पृथ्वी दिवस पर विश्वविद्यालय के विभाग विवरण के पात्राने ने विष्या लीकरीन

हिसार, 22 अप्रैल (हि. स. 11 बजा) के हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विभागों में डॉ. अ. बोरोड़ ने कहा है कि पृथ्वी जो जीवों और जलों का लोगा बनती है, उसका पार्श्विक संसाधनों के अभ्यास लौह के अलावा विवरण में, संतुलन बढ़ रहा है। जिसकी दृष्टि से विश्व पृथ्वी दिवस 20 एप्रिल है। ऐसे में हजार पृथ्वी के प्रति अपने बोरोड़ जी की व्याख्या विवरण और इसे बहुत बढ़ावा दें और उत्तम दृष्टि है।

ऐसे में हजार बालों के लिए बालों की अपनी कठम उठाने का आवश्यक बहावी की जरूरत है।

डॉ. बोरोड़ ने विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के विभाग विवरण कालों के अपनी बोरोड़ जी की जरूरत का अनुसरण कर दिया है। डॉ. बोरोड़ जी के दृष्टिकोण से विष्या लीकरीन डॉ. बोरोड़ जी की जरूरत की बाबा 22 अप्रैल 1970 के विश्व पृथ्वी दिवस विवरण द्वारा दिया गया था। आगे बालों के लिए विभाग के विभागों को विभाग के अवसर पर उन्होंने उन्हें बोरोड़ जी की जरूरत की बाबा द्वारा दिया गया था।

उन्होंने बालों की जरूरत की विवरण विवरण के लिए एक विश्व विवरण की जरूरत है। इस वर्ष की दीन पृथ्वी की पुरुष व्यापारित करना राजा गया है। पृथ्वी की स्वतंत्रता व यहाँ की जरूरत बढ़ाने के लिए हम यहाँ का बोरोड़ जी की जरूरत और बेहतर बनाने का विवरण देना चाहिए। जबकि बालों के लिए बोरोड़ जी की जरूरत, पृथ्वी की जरूरत विवरण की जरूरत है।

विश्वविद्यालय विवरण की जरूरत

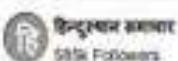


चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिंदुस्तान समाचार एजेंसी	23.04.2021	--	--

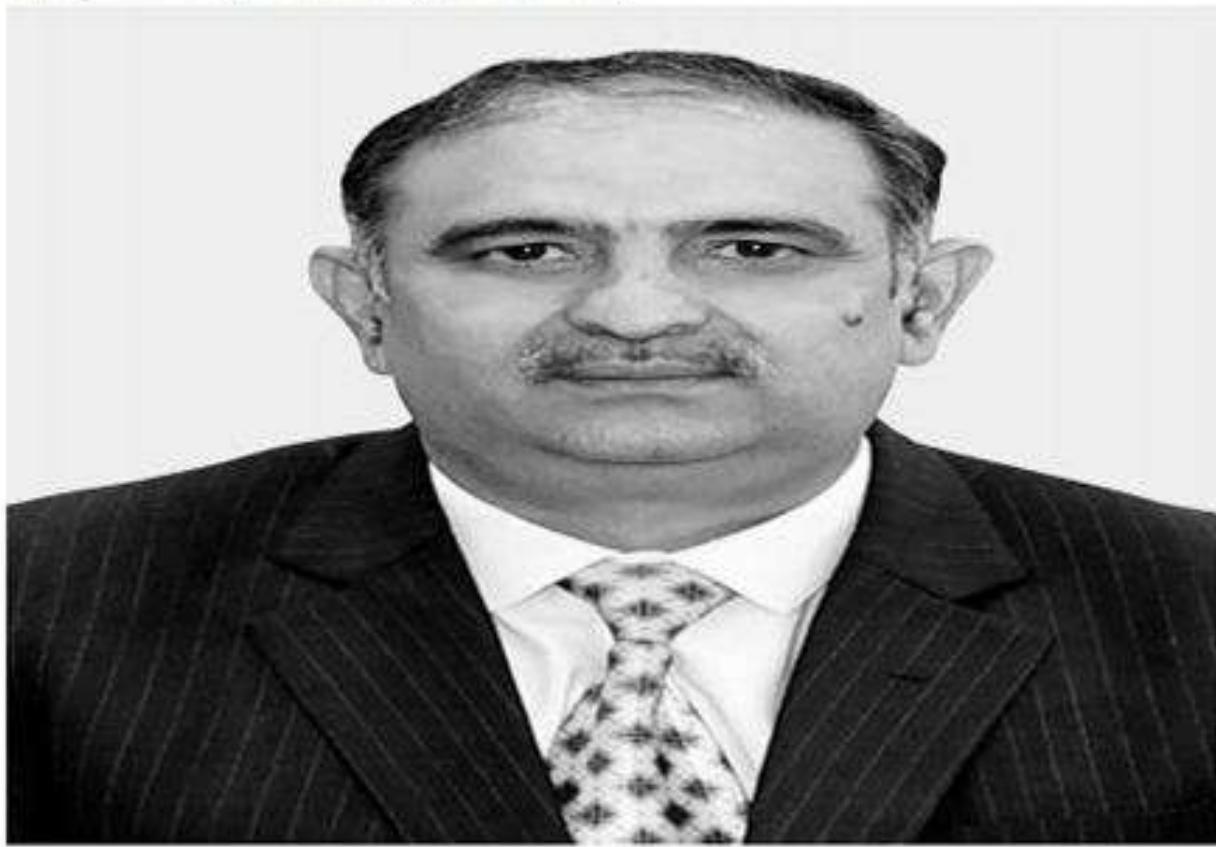
25 dailynews



Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar

50.5k Followers

हिसार : कृषि वैज्ञानिक कर रहे अपील, लिखारीसी अनुसार करे काम की विजाई



23 Apr 2021 4:44 PM

—एप्रैल 2 कृषि विभाग नियन्त्रक अनुसार काम की विजाई के लिए विभाग बाहर रहा जगहकहिसार, 22 अप्रैल (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृष्णनिंदी डॉ. बीजान कोइरान ने कहा है कि विभाग काम की विजाई विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक द्वारा कराई गई लिखारीसी अनुसार को तभी विभाग को अपील काम की अन्तीम विभाग नियोजित कर दी जाएगी अपील से अधिक मुश्वरा है।

कृष्णनिंदी ने बीजान को बताया कि गहर वर्ष बीमारियों से अवृत्ति हुई कालानी की अन्य गहरायी से पहल बात कि विभाग विजाई से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की गई कृषि विजाई की दी उनकी कामानी में बीमारियों का असर अन्य कालानी की तुलना में बहुत कम या इतनी बहुत कम या विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक द्वारा विजाई की गई कामानी की विजाई से लगभग ऐसी है। इसके लिए बहुत ज्यादा कृषि विभाग एवं एप्रैल के वैज्ञानिक द्वारा काम करने से पहले विजाई की गई कामानी के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम गठित की गई है। यह असेप्टेम्बर 28 अप्रैल तक चलाया जाएगा।